मसीह में अपनी सच्ची पहचान को जानना

यदि आप मसीह में हैं, तो आप वह नहीं रहे जो पहले थे। आपकी पहचान अब आपके अतीत, आपकी असफलताओं, आपकी भावनाओं या दूसरों के विचारों से नहीं बनती। आपकी सच्ची पहचान इस पर आधारित है कि **परमेश्वर आपके बारे में क्या कहता है।** जिस क्षण आपने प्रभु यीशु को ग्रहण किया, सब कुछ बदल गया। पुराना चला गया, नया आ गया। आप अब एक नई सृष्टि हैं — ऊपर से जन्मे, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, और राजा की संतान के रूप में जीवन जीने के लिए बुलाए गए।

दुःख की बात यह है कि बहुत से विश्वास करनेवाले लोग आत्मिक भिखारी की तरह जीते हैं, जबकि वे परमेश्वर के राज्य के वारिस हैं। वे ऐसे प्रार्थना करते हैं मानो परमेश्वर बहुत दूर हों, जबकि उन्होंने पहले ही अपना घर उनके भीतर बना लिया है। वे उस अपराधबोध को उठाए रहते हैं जिसे यीशु पहले ही क्रूस पर उठा चुके हैं। मसीह में अपनी पहचान को जानना सब कुछ बदल देता है — आपकी प्रार्थना, आपकी आराधना, आपके संबंध, आपका आत्मविश्वास और आपकी शांति।

आइए गहराई से देखें कि परमेश्वर आपके बारे में क्या कहता है, और वह आपकी जीवन में क्या अर्थ रखता है।

1. आप परमेश्वर की संतान हैं

आप अब न तो दास हैं, न अजनबी — आप स्वयं परमेश्वर के पुत्र या पुत्री हैं।

“परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।” (यूहन्ना 1:12)

“देखो, पिता ने हम पर कैसा महान प्रेम प्रगट किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ! और हम हैं भी।” (1 यूहन्ना 3:1)

जिस क्षण आपने यीशु पर विश्वास किया, परमेश्वर ने आपको अपनी परिवार में दत्तक ले लिया। अब आप पूरी तरह, सदा के लिए, आनन्द के साथ उसके हैं। आपके पास एक पिता है जो आप में प्रसन्न होता है। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो आप उसकी ध्यान पाने की कोशिश नहीं कर रहे — वह पहले से ही आप पर लगा है। आप स्वीकृति पाने की भीख नहीं माँग रहे — आप पहले ही उसके प्रिय में स्वीकार किए गए हैं।

परमेश्वर की संतान के रूप में जीवन जीने का अर्थ है लज्जा नहीं, आत्मविश्वास में चलना। यह साहसपूर्वक अनुग्रह के सिंहासन के पास आने का अर्थ है, यह जानते हुए कि आप बिना माप के प्रेम किए गए हैं।

2. आप क्षमा किए गए और छुड़ाए गए हैं

आपका अतीत अब आपको परिभाषित नहीं करता। आपके पाप मिटा दिए गए हैं — पूरी तरह चुकाए गए।

“जिसमें हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसकी अनुग्रह की धन्यता के अनुसार प्राप्त हुई।” (इफिसियों 1:7)

“पूर्व पश्चिम से जितनी दूर है, उतनी ही दूर उसने हमारे अपराधों को हम से कर दिया है।” (भजन संहिता 103:12)

जब परमेश्वर आपकी ओर देखते हैं, तो वे आपका पाप नहीं देखते — वे अपने पुत्र को देखते हैं। आप यीशु के लहू से शुद्ध किए गए हैं। आप धार्मिक हैं, अपने कार्यों के कारण नहीं, बल्कि जो उसने आपके लिए किया उसके कारण।

क्षमा पाए हुए के रूप में जीने का अर्थ है अपनी असफलताओं को दोहराना छोड़ देना और उसकी अनुग्रह में आनन्दित होना। इसका अर्थ यह भी है कि जैसे आपको क्षमा मिली है, वैसे ही आप दूसरों को भी क्षमा करें।

3. आप एक नई सृष्टि हैं

क्रूस ने केवल आपके पुराने जीवन को ढका नहीं, उसे समाप्त कर दिया। और पुनरुत्थान में आपको नया बना दिया गया।

“इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें जाती रहीं; देखो, सब कुछ नया हो गया।” (2 कुरिन्थियों 5:17)

आप अपनी गलतियों, अपने अतीत या अपनी कमजोरियों का योगफल नहीं हैं। आप आत्मा से जन्मे एक नए व्यक्ति हैं। वही आत्मा जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया, अब आप में वास करता है।

नई सृष्टि के रूप में जीवन जीना मतलब है स्वर्गीय दृष्टिकोण से सोचना, न कि सांसारिक दृष्टि से। अब आप यह नहीं पूछते, “मैं कौन हूँ?” आप घोषणा करते हैं, “मैं वही हूँ जो परमेश्वर कहता है कि मैं हूँ।”

4. आप पवित्र और धर्मी हैं

पवित्रता प्रयास से नहीं आती — यह परमेश्वर द्वारा अलग किए जाने से आती है। आप अपने प्रदर्शन से नहीं, बल्कि उसके उपस्थिति से पवित्र बनाए गए हैं।

“जिसने पाप को नहीं जाना, उसे हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।” (2 कुरिन्थियों 5:21)

“क्योंकि उसी एक बलिदान से उसने पवित्र किए जानेवालों को सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।” (इब्रानियों 10:14)

परमेश्वर आपको ऐसा पापी नहीं कहता जो पवित्र बनने की कोशिश कर रहा हो। वह आपको “सन्त” कहता है — जो पहले से ही सत्य में चलता हुआ सीख रहा है। अपने आप को धर्मी देखना आपके जीवन को बदल देता है — आप अपराधबोध नहीं, स्वतंत्रता में चलते हैं; लज्जा नहीं, शुद्धता में; भय नहीं, अनुग्रह में।

5. आप परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस हैं

आप केवल परमेश्वर के परिवार का हिस्सा नहीं — आप उसकी विरासत में सहभागी हैं।

“आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी हैं; अर्थात परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस।” (रोमियों 8:16–17)

जो कुछ यीशु का है, अब वह आपका भी है — उसकी शान्ति, उसका अधिकार, पिता के साथ उसका सम्बन्ध, और उसके सिंहासन तक पहुंच। आप परमेश्वर के घराने में राजसी संतान हैं।

वारिस के रूप में जीवन जीना मतलब है आत्मिक अनाथ की तरह जीना बंद करना। आपके पास आनन्द, बुद्धि, प्रबन्ध और शक्ति की विरासत है। स्वर्ग के सारे संसाधन आपके लिए खुले हैं क्योंकि आप राजा के हैं।

6. आप मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों पर बैठे हैं

आप विजय प्राप्त करने के लिए नहीं लड़ रहे — आप विजय की स्थिति से लड़ रहे हैं।

“और उसने हमें भी उसके साथ जिलाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों पर उसके साथ बैठाया।” (इफिसियों 2:6)

इसका अर्थ है कि आपका स्थान सुरक्षित है, आपका अधिकार वास्तविक है, और आपका दृष्टिकोण बदलना चाहिए। आप शत्रु को नीचे से नहीं देखते — आप उसे मसीह की विजय की दृष्टि से ऊपर से देखते हैं। वही पुनरुत्थान की शक्ति जो यीशु में थी, अब आप में कार्य कर रही है।

मसीह के साथ बैठे हुए व्यक्ति के रूप में जीना मतलब है अधिकार के साथ प्रार्थना करना, शान्ति में चलना, और हर युद्ध का सामना यह जानते हुए करना कि परिणाम पहले से ही मसीह में तय हो चुका है।

7. आप परमेश्वर का मन्दिर और उसका निवास स्थान हैं

परमेश्वर मनुष्यों के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहते — वे आप में रहते हैं।

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?" (1 कुरिन्थियों 3:16)

"मसीह तुम में है — महिमा की आशा।" (कुलुस्सियों 1:27)

आप जहाँ भी जाते हैं, परमेश्वर की उपस्थिति को लेकर चलते हैं। आपका हर वचन, हर स्पर्श, हर भलाई का कार्य पृथ्वी पर स्वर्ग को प्रकट कर सकता है। परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में जीवन जीने का अर्थ है अपने जीवन को पवित्र समझना, अपने शरीर, मन और उद्देश्य का आदर करना।

आप खाली नहीं हैं — आप भरे हुए हैं। आप सामान्य नहीं — आप जीवित मन्दिर हैं।

8. आप चुने गए और प्रेम किए गए हैं

आपके कुछ भी करने से पहले ही परमेश्वर ने आपको चुन लिया था। उन्होंने आपको चाहा।

“जैसा उसने हमें जगत की नींव डालने से पहिले ही उसमें चुन लिया, कि हम प्रेम में उसके सम्मुख पवित्र और निर्दोष हों।” (इफिसियों 1:4)

“परन्तु तुम एक चुनी हुई जाति, राजकीय याजकता, पवित्र जाति, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।” (1 पतरस 2:9)

आपको प्रेम पाने के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं — आप पहले से ही प्रेम किए गए हैं। आपको अपनी कीमत सिद्ध करने की जरूरत नहीं — वह पहले ही आपको दी जा चुकी है। चुने हुए व्यक्ति के रूप में जीने का अर्थ है अब दूसरों से तुलना न करना, बल्कि उस स्वीकृति से जीवन जीना जो आपको पहले ही दी गई है।

9. आप संसार की ज्योति हैं

आप केवल स्वर्ग जाने के लिए नहीं बचाए गए — आपको पृथ्वी पर चमकने के लिए भेजा गया है।

“तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसाया गया है, वह छिप नहीं सकता।” (मत्ती 5:14)

जब आप जानते हैं कि आप कौन हैं, तो आप अपनी ज्योति छिपाना छोड़ देते हैं। आप निर्भीकता, दया और सत्य के साथ जीते हैं। जब दूसरे कटु होते हैं, आप क्षमा करते हैं। जब दूसरे घृणा करते हैं, आप प्रेम करते हैं। आपका जीवन मसीह के हृदय का प्रतिबिंब बन जाता है।

10. आप जयवंत से भी बढ़कर हैं

जीवन में लड़ाइयाँ आ सकती हैं, पर आपकी विजय पहले ही मसीह में सुनिश्चित हो चुकी है।

“परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया, जयवंत से भी बढ़कर हैं।” (रोमियों 8:37)

आप परमेश्वर की कृपा पाने के लिए नहीं लड़ते — आप इसलिए लड़ते हैं क्योंकि वह पहले ही आपकी है। आप अपनी सामर्थ से नहीं जीतते — आप उस एक के द्वारा जीतते हैं जिसने पहले ही जीत लिया। जयवंत से भी बढ़कर जीवन जीना मतलब है हर परिस्थिति का सामना भय नहीं, विश्वास के साथ करना।

यह पहचान आपके जीवन को कैसे बदलनी चाहिए

मसीह में अपनी पहचान को जानना आपको घमण्डी नहीं बनाता — यह आपको विनम्र, कृतज्ञ और प्रेम में सामर्थी बनाता है। यह आपको लापरवाह नहीं बनाता — यह आपको साहसी बनाता है।

जब आप जानते हैं कि आप क्षमा किए गए हैं, तो आप दूसरों को क्षमा करते हैं।
जब आप जानते हैं कि आप प्रेम किए गए हैं, तो आप निडर होकर प्रेम करते हैं।
जब आप जानते हैं कि आप परमेश्वर की संतान हैं, तो आप शान्ति और सुरक्षा में चलते हैं।
जब आप जानते हैं कि आप धर्मी हैं, तो आप वह पाने की कोशिश नहीं करते जो पहले से आपका है।
जब आप जानते हैं कि आप मसीह के साथ बैठे हैं, तो आप विजय के लिए नहीं, बल्कि विजय से जीवन जीते हैं।

यह अभिमान नहीं — यह विश्वास है। अपने आप को वैसे देखना जैसे परमेश्वर देखता है, सच्चे नम्रता की नींव है। आप अपने मूल्य और उद्देश्य के बारे में स्वर्ग के सत्य से सहमत हो जाते हैं।

अपनी पहचान में जीवन जीना

आप परमेश्वर की संतान हैं।
आप क्षमा किए गए, छुड़ाए गए और नए बनाए गए हैं।

आप पवित्र, धर्मी और प्रिय हैं।
आप स्वर्गीय स्थानों पर बैठे हैं, हर आत्मिक आशीष से धन्य हैं।
आप परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस हैं।
आप चुने गए, अलग किए गए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं।
आप जयवंत से भी बढ़कर हैं।

यह है कि आप कौन हैं। ऐसे ही जिएँ। ऐसे ही बोलें। ऐसे ही प्रार्थना करें। ऐसे ही प्रेम करें।

हर दिन आपके पास एक विकल्प है — या तो संसार जो कहता है उसमें जीना, या जो परमेश्वर कहता है उसमें जीना। संसार आपको कहता है कि आप अयोग्य, टूटे हुए, और महत्वहीन हैं। परमेश्वर आपको कहता है कि आप प्रिय, चुने हुए, छुड़ाए हुए और सामर्थी हैं।

आप कुछ बनने की कोशिश नहीं कर रहे — आप पहले से ही हैं। मसीही जीवन कुछ पाने का नहीं, बल्कि विश्वास करना सीखने का जीवन है। आप परमेश्वर तक पहुँचने की कोशिश नहीं कर रहे — परमेश्वर पहले ही आप तक आ चुका है।

जब आप सच में अपनी पहचान पर विश्वास करते हैं, तो आपका जीवन बदल जाता है। आप उन लोगों से प्रेम करने लगते हैं जो बदले में कुछ नहीं दे सकते। आप उन पर आशीष देते हैं जो आपको शाप देते हैं। आप लोगों की स्वीकृति का पीछा छोड़कर उद्देश्य में चलने लगते हैं। आप अपने पिता के हृदय को प्रतिबिंबित करने लगते हैं।